प्राकृतिक रूप से कैसे सबको सबकुछ मिले

शरीर और उसकी संरचना का रहस्य एक आकर्षण का केन्द्र है हमारे लिए। लेकिन उसके लिए हमें पाँच तत्वों के विषय में गहराई से चिंतन करना है। हमारा पूरा शरीर पाँच तत्वों से मिलकर बना है जिसमें पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश शामिल हैं। इन तत्वों का प्रभाव हमारे अंगों पर है, क्योंकि हरेक अंग एक-एक तत्व से जुड़कर बना है। हर तत्व की अपनी विशेषता है, जैसे हमारा पृथ्वी तत्व शक्ति से जुड़ा हुआ है, वहीं जल तत्व पवित्रता से जुड़ा हुआ है। इसी क्रम में अग्नि तत्व सुख से, वायु तत्व प्रेम से और आकाश तत्व शांति से जुड़ा हुआ है। एक और गहरी बात यह है कि इन तत्वों का सम्बंध प्राकृतिक रंगों से भी है। जैसे शक्ति पृथ्वी तत्व से जुड़ा है, इसका रंग लाल है, वहीं जल तत्व पवित्रता से जुड़ा है, जिसका रंग नारंगी है। वहीं अग्नि तत्व का रंग पीला है, वायु तत्व हरा, आकाश तत्व नीला या आसमानी है। अब आप उपरोक्त बातों को पढ़कर समझ गये होंगे कि ये तत्व गड़बड़ हैं या अंग गड़बड़ है या अंगों में होने वाला रोग कहीं और से जुड़ा है। हमारा स्वाध्ययन कहता है कि सबकुछ हमारे गुणों और विकारों से जुड़ा हुआ है। आज संसार में आधुनिकता है, और आजकल एक मशीन भी आई है जिससे हमारे शरीर के पूरे आभामण्डल को चेक करते हैं और बता देते हैं कि आज से चार-पाँच महीने बाद कौन सी बीमारी होने वाली है, लेकिन हमें ये आश्चर्य होता है कि मशीन कैसे पता लगा सकती है! क्या वो सेल्स और टिसूज़ तक को रीड कर लेती है? इसका रहस्य कुछ और है, क्योंकि हमारे विचारों की प्रक्रिया बहुत तीव्रता से हमारी कोशिकाओं में परिवर्तन लाती है, और वो निर्भर करता है कि हमारे विचार किस तरह के हैं, उसी आधार से हमारे अंदर परिवर्तन आता है। अगर आपने जाने-अनजाने कोई ऐसे विचार अपने अंदर चलाया जो ईर्ष्या, नफरत, राग, द्वेष आदि से भरा हुआ होगा, तो उसके वायब्रेशन्स कोशिकाओं के अंदर चले जाते हैं। वैसे भी हमारा शरीर एक ऊर्जा ही तो है, जिसको हम फिज़िकल ऊर्जा कहते हैं। क्वांटम फिज़िक्स पढ़ने वाले इस बात को बखूबी समझ सकते हैं। अब मशीन हमारे सेल्स के चारो तरफ फैली हुई ऊर्जा को रीड करती है, जिसको लोग आभामण्डल कहते हैं, और वो आभामण्डल नकारात्मक है तो उससे सम्बंधित रोग को वो आपसे बता देती है कि आपको आने वाले कुछ महीनों में ये रोग हो जायेगा, क्योंकि आभामण्डल में उस अंग से सम्बंधित तत्व और तत्वों से सम्बंधित मूल्य, वैल्यूज़, गुण और रंगों को वो देखती है। अगर रंग कमज़ोर है, धूमिल है या काला है तो वो तुरंत कह देती है कि आपके इस अंग में ये वाला रोग होगा। उदाहरण के लिए जैसे ही मशीन ने आपके जल तत्व से सम्बंधित अंगों पर फोकस किया, जैसे किडनी, युरीनरी सिस्टम आदि, तो उससे यदि बहुत ज़्यादा अटैचमेंट के वायब्रेशन्स आ रहे हैं तो मशीन उस अटैचमेंट के आधार से उस वायब्रेशन्स को कैच करके आने वाले समय में बता देगी कि आपके युरीनरी सिस्टम में प्रॉब्लम आने वाली है। अब सोचिए ज़रा कि समस्या तुरंत हमारे सामने आ नहीं रही तो हम सोचते हैं कि हमने एक या दो बार ही तो सोचा, इससे कहाँ हमारे अंदर वो वाली तकलीफ या रोग आ जाएंगे, लेकिन आएंगे तो सही ना, भले चार-पाँच महीने बाद ही क्यों ना आयें।

फिर ऐसा क्या करें जो ठीक हो जाए

यह आज एक स्वाभाविक प्रक्रिया है कि हम बस सोचते ही जा रहे हैं, और उन संकल्पों से हमारे अंदर जो ऊर्जा का प्रवाह होता है, उसी से हमारे सूक्ष्म शरीर का निर्माण होता है। जिस प्रकार पाँच तत्वों से स्थूल शरीर बनता है, उसी तरह तीन तत्वों के आधार से सूक्ष्म शरीर बनता है, जिसमें अग्नि, वायु और आकाश शामिल होते हैं। अग्नि तत्व सुख से सम्बन्धित है, वायु तत्व प्रेम से सम्बंधित और आकाश तत्व शांति से सम्बंधित है। अगर एक शब्द में कहें कि यही हम हैं, हमारे स्वरूप में शांति, प्रेम, खुशी समायी हुई है, लेकिन आज पृथ्वी और जल तत्व के साथ अधिक से अधिक जुड़ने के कारण हमारे अधिक से अधिक संकल्प इन्हीं दो तत्वों के लिए खर्च हो रहे हैं। डायटीशियन कहते हैं कि मनुष्य के शरीर को चलाने के लिए मात्र एक चपाती की आवश्यकता है, अगर उसे हम पच्चीस से तीस मिनट में खायें तो, लेकिन आवश्यकता से अधिक खाने के कारण आज हमारे अंदर विकृति पैदा हो गई है, रोग पैदा हो गए हैं। जैसे सूक्ष्म शरीर के ऊपर एक मोटा आवरण होता है, जिसको आप स्थूल शरीर कह सकते हैं, जब तक ये हमारे साथ है, हम दूसरों से खुलेपन के साथ नहीं मिल सकते, खुलेपन से बात नहीं कर सकते, खुलेपन से व्यवहार नहीं कर सकते। हम इस कॉन्शियसनेस के साथ जी रहे हैं कि हम एक शरीर हैं, जबकि सूक्ष्म शरीर के साथ आत्मा जुड़ी हुई है। अब सोचिए ज़रा, आज आत्मा की शांति, आत्मा का दुःख और आत्मा का प्रेम अपने से कहीं दूर है, वो दिन-रात देह को चलाने के लिए दौड़-भाग मचा रहा है, जिससे उसके अंदर उन्हीं संकल्पों का वास है, और उन संकल्पों की वजह से ही ईर्ष्या, द्वेष, नफरत हमारे तत्वों में भर गई है। हमारे शरीर के चारो तरफ लगभग अठारह इंच हमारा आभामण्डल फैलता है, उस आभामण्डल में यही ऊर्जा हमेशा से भरी हुई है। इसी कारण लोग उसी ऊर्जा को अपने में महसूस करते हैं, उनको लगता है कि सामने वाले के अंदर नकारात्मकता है, जबकि नकारात्मकता तो हमारे अंदर है, इसीलिए बीच-बीच में वो ऊर्जा हमें तंग करती है।

देखिए हो क्या रहा है कि हमारी स्व की ऊर्जा जिसे हम सूक्ष्म शरीर या लाइट का शरीर भी कह सकते हैं, उसका सारा बोझ इस समय शरीर और शरीर के सम्बन्धियों के साथ जुड़ चुका है, तो हमारा जीवन भी तो सीमित हो गया ना, हम भी वैसे के वैसे, बस इन्हीं ख्यालों में पड़े रहते हैं। जिससे आज हम अपने आपको सुखी महसूस नहीं कर सकते, क्योंकि महसूसता की शक्ति सूक्ष्म शरीर के साथ है, ना कि स्थूल शरीर के साथ। उसके ऑरा के द्वारा ही लोग आपको जानते और पहचानते हैं। इसलिए लोग हमेशा मज़ाक-मज़ाक में भी कहते हैं कि आप मिट्टी के बने हो, मिट्टी में मिल जाओगे। कोई भी उपरोक्त तत्वों को या सूक्ष्म शरीर को समझ ही नहीं पाता, बस दिन भर मिट्टी और मिट्टी की बातें जैसे धन, पैसा, रुपया, परिवार, बिज़नेस आदि जिससे लोग आपको सीमित महसूस करते हैं, क्योंकि आप भी सीमित सोच रहे हैं। बहुत बड़ा साइंस है इसके पीछे कि हम सब थोड़े दिन के लिए यहाँ आए हैं कर्म करने के लिए, तो निश्चित रूप से हमें कर्म करना है शरीर को चलाने के लिए, ना कि शरीर में फँसने के लिए। सबकुछ सूक्ष्म शरीर के साथ है। यदि हम अपने को शांति प्रेम और पवित्रता से निरंतर भरपूर करें, पूरे विश्व के लिए सोचें तो हमारा आभामण्डल पूरे विश्व तक जायेगा और हम पूरे विश्व की सेवा घर बैठे कर पायेंगे और सबको प्राकृतिक रूप से सबकुछ दे पायेंगे। सोचना है इसपर, एक बार नहीं, दो बार नहीं, हज़ार बार। यही हमारे ब्रह्माकुमारीज़ की, हमारी वरीष्ठ दादियों की, हमारे परमात्मा की दिन रात हम सबके लिए यही शिक्षा है कि बच्चे! फरिश्ता बनो, यानि मिट्टी पानी अर्थात् काम और मोह से तुम्हारा कोई सम्बंध नहीं, इससे ही तुम्हारी स्थिति खराब हुई है, इससे बाहर निकलो और बन जाओ फरिश्ता। समझो इसे....

आज हम आपसे वो बात करने जा रहे हैं, जिस बात से ऐसा नहीं कि आप अनभिज्ञ हैं, या नहीं जानते हैं। हाँ, यह कह सकते हैं कि आप जागृत नहीं हैं। क्योंकि दुनिया में हमारी हरेक समस्या का मूल हमारे अंदर है, ना कि किसी और के।
लेकिन उस मूल को अंदर तक जाकर समझने के लिए हमें अपने शरीर की संरचना तथा उससे जुड़ी हुई अन्य बातों को ध्यान से सुनना और समझना होगा।

चुनार-उ.प्र.। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर पतंजलि तथा ब्रह्माकुमारीज़ के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए विधायक अनुराग सिंह, डीएम विमल कुमार दुबे, इंजीनियर राज बहादुर सिंह तथा अन्य।

दिल्ली-पीतमपुरा। 'समर कैम्प' के दौरान समूह चित्र में बच्चों के साथ ब्र.कु. सुनीता, ब्र.कु. कनिका, संगीत शिक्षिका शालू बहन, स्कूल टीचर पूनम बहन तथा अन्य।

कुशीनगर-उ.प्र.। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के कार्यक्रम में विधायक रजनीकांत मणि को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. मीरा।

सुन्नी-हि.प्र.। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर सीनियर सेकेन्ड्री स्कूल के बच्चों को योग के बारे में समझाते हुए ब्र.कु. शकुन्तला। साथ हैं ब्र.कु. रेवादास तथा ब्र.कु. नोखराम।

ब्रह्मपुर-ओडिशा। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर 'राजयोग फॉर होलिस्टिक हेल्थ' कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए बिशप शरत चन्द्र नायक, डॉ. पी.सी. पात्रा, डॉ. पी.सी. साहू, ब्र.कु. मंजू, ब्र.कु. माला तथा अन्य।

बांदा-उ.प्र.। विश्व योग दिवस पर जिला कारागार में आयोजित कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए जेल अधीक्षक हरिबख्श सिंह। साथ हैं ब्र.कु.गीता व ब्र.कु.शालिनी।